‘‘प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व’’

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा–846004

के

मानविकी संकाय के हिन्दी विषय

में

पीएच0डी0 शोध हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 बिंदु चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
सी0एम0 कॉलेज
दरभंगा (बिहार)

शोध प्रज्ञा

अणु कुमारी
पीएच0डी0
वर्ग क्रमांक–42
पैट क्रमांक–22090051
मो0नं0–9709734165

''प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व''

प्रस्तावना :–

शोध वही है, जिससे निकले, नव स्थापना–प्रकाश।
फैले जिससे मानवता का, पावन प्रेमोल्लास।।

'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' अनुसंधान के आलोक में संबंधित तथ्यों का संकलन कर व्यवस्थित एवं सावधानीपूर्वक सूक्ष्म बुद्धि से राजनीति के अपराधियों से मैत्री, राजनीति का अपराधीकरण और जमीनी राजनीति के पतन–संबंधी सिद्धांतों का उद्‌घाटन करना और राजनीति की वास्तविक जन–विकासात्मक छवि की स्थापना ही है, ताकि राजनीति अवसरवादी और आपराधिक अंधकार से निकलकर जन–सरोकारी और राष्ट्र–हितकारी प्रकाश की ओर बढ़ सके।

अवसरवादी राजनीति ने किया देश–बर्बाद।
मात्र जमीनी राजनीति से ही जन–गन–गण आबाद।।

आज की राजनीति दोधारी तलवार हो चुकी है, जो अपने दल के सारस्वत और जनता सहित देश–विकासक जमीनी नेताओं सहित विरोधी दलों पर भी प्रहार करती है। प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन की कविता हो या कहानी, उपन्यास हो या विचारोत्तेजक आलेख, सभी में विकृत राजनीति को ही रेखांकित किया गया है।

मार्क्सवाद से प्रभावित राजेन्द्र राजन स्वयं भी वामपंथी विधायक रह चुके हैं। एक बार नहीं, तीन बार जयी जनप्रतिनिध के रूप में राजनीति की विकृतियों को करीब रहकर देख ही नहीं चुके हैं, अपितु उसका शिकार भी हो चुके हैं, जिसके कारण इनका साहित्य प्रत्यक्षदर्शी यथार्थ का आईना ही प्रतीत होता है, इसीलिए अनुसंधान का आधार 'राजन–साहित्य' को बनाया गया है।

शोध की आवश्यकता :–

किसी भी प्रकार की विकृति को दूर करने का औजार है–अनुसंधान, जो विकृतिधारकों हेतु हथियार भी सिद्ध होता है। विकृति पारिवारिक हो या सामाजिक, देशी हो या विदेशी, पारंपरिक हो या सांस्थनिक, अनुसंधान के बल पर ही उसे दूर कर सुकृति स्थापित करने का जब सार्थक प्रयास किया जाता है, तभी अनुसंधानक को सफलता मिलती है और राष्ट्र का कल्याण होता है।

प्रस्तुत अनुसंधान 'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' इसी कड़ी की एक सशक्त लड़ी है, क्योंकि इनके साहित्य में राजनीतिक विकृतियों पर जबरदस्त प्रहार हुआ है। राजनीति जब अवसरवादी हो जाती है, तब समझौतावादी भी हो जाती है और जब समझौतावादी हो जाती है, तब जिस दल से संबंधित रहती है, उस दल के मूलभूत सिद्धांतों को भी भूल जाती है और तब राजनीति से संबंधित दल स्वार्थी दलदल का ही पर्याय बन जाता है, जिसमें उसके जमीनी और जन–विकासक सच्चे नेता भी डूबने से बच नहीं पाते हैं।

क्रांतिकारी कलमकश श्री राजन जी ने इसका उद्घाटन आँखों देखी घटना की तरह किया है, जिससे इनकी पुस्तकों पर इनके दल के ही झंडाबरदारों की भी आँखें लाल हो चुकी है। इस संदर्भ में हिन्दी शोधात्मक पत्रिका 'सुमन सुरभि' के श्रेष्ठ कलमकश सम्पादक श्री नरेन्द्र कुमार सिंह ने लिखा है–''राजेन्द्र राजन छात्र जीवन से ही साहित्योन्मुखी रूझान के रहे हैं... यह सच है कि जो काम करता है, उसी पर अँगुली उठती है या कुछ स्वार्थी जिनकी दाल नहीं गलती है, वही उठाते हैं। राजन जी ने अनवरत शोषित–पीड़ित जन–गण के होने वाले संघर्षों में लाल झंडा उठाकर अग्रणी भूमिका अदा की है। धरना–प्रदर्शन और आंदोलनों के विभिन्न प्रकार की रणनीतियों और क्रिया–कलापों में भागीदारी सुनिश्चित की, लेकिन कोरोना–काल की टटकी उपज के रूप में इनका नवीनतम उपन्यास 'लक्ष्यों के पथ' पर क्या प्रकाशित हुई कि कम्युनिस्ट पार्टी में ही धमाल मच गया। इसका मुख्य कारण है–पार्टी की ढुलमुल कार्यनीति को जस की तस धर दीनी चदरिया के कारण सभी बौखला गए और पचा नहीं पा रहे हैं। फलतः कॉमरेड राजन पर ओला–पत्थर की बौछार जारी है। पुस्तक के बहिष्कार का ऐलान किया जा चुका है, साथ ही पार्टी से भी बाहर करने की राह ढूँढ़ी जा रही है।''

'श्रीमद्भागवद्गीता' में कहा गया है–

''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यं अप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्, ऐषा धर्मः सनातनः।।''

अर्थात् हमें सत्य बोलना चाहिए और प्रिय बोलना चाहिए। कभी भी अप्रिय लगने वाला सत्य नहीं बोलना चाहिए, लेकिन प्रिय लगने वाला असत्य भी नहीं बोलना चाहिए, यही सनातन धर्म है।

लेकिन साहित्यिक धर्म इससे अलग है। इसमें सत्य प्रिय हो या अप्रिय, दोनों को रेखांकित करना पड़ता है। जिन्होंने डंके की चोट पर अप्रिय लगनेवाले सत्य का भी बखान किया, वे विविध प्रकार की प्रताड़नाओं का शिकार भी हुए। कथा–सम्राट प्रेमचन्द भी इससे

बच नहीं सके। उन्होंने अपनी पहली कहानी अपनी मामा की प्रताड़ना से ऊब कर उन्हीं के ऊपर लिख दी, जिसे पढ़ते ही मामा ने उसे जला दी, लेकिन उनके प्रति मामा का जुल्म बंद हो गया। यहीं धनपत राय ने कलम की शक्ति को पहचाना और वे सत्य घटनाओं को कहानियों के माध्यम से प्रकट करने लगे। परिणामतः उनका प्रथम कहानी–संग्रह 'सोजेवतन' को अंग्रेजों ने जला दिया और उन्हें धमकी भी दी गई, लेकिन वे अडिग रहे और नबाब राय आदि छदम नामों से लिखते–लिखते अंत में प्रेमचन्द हो गए। यह गौरव का विषय है कि राजेन्द्र राजन भी उसी प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव बन गए, जिसके संस्थापक अध्यक्ष प्रेमचन्द भी रह चुके थे।

यही कारण है कि विरोध के बावजूद उनकी कलम अबाध गति से आज भी चल रही है। प्रथम प्रकाशित कृति 'एक रंग यह भी' से लेकर सदयः प्रकाशित कृति 'लक्ष्यों के पथ पर' जितने भी उपन्यास और कहानियाँ हैं, तकरीबन सभी में विकृत राजनीति को गहराई से रेखांकित किया गया और इस अंतराल में उनकी अपनी कम्युनिस्ट पार्टी भी आ गयी है, जिसके कारण दल के अंदर से भी उनके ऊपर कुठाराघात होते रहे हैं, तथापि कलमक्रांति के अडिग सिपहसालार की तरह वे करीब 77वें वर्ष में भी यथार्थवादी प्रगतिशील साहित्य की रचना कर रहे हैं।

उनका प्रथम प्रकाशित उपन्यास 'एक रंग यह भी' राजनीतिक पतन को ही रेखांकित किया है, जिसका तृतीय संस्करण का प्रकाशन 2020 में अभिधा प्रकाशन, राम दयालु नगर, मुजफ्फरपुर द्वारा किया गया है। इस पुस्तक पर विचार करते हुए बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष डॉ0 ब्रजकिशोर पाण्डेय ने उपन्यास के द्वितीय आवरण पृष्ठ पर लिखा है कि प्रस्तुत उपन्यास में बिहार में प्रचलित एक महत्वपूर्ण सवाल को उठाया गया है। वह सवाल है–जमींदारों और सामंतों के यहाँ दलित, पिछड़ी और उपेक्षित जातियों से बैठ–बेगारी कराने और उनकी बहू–बेटियों की इज्जत के साथ खुलेआम खिलवाड़ करने का।

उपन्यासकार राजन ने इस उपन्यास में कम्युनिस्ट आंदोलन की एक दुखती रग पर उँगली रही है–'आज जन–संगठन का तानाबाना पूर्ण रूपेण बिखरता जा रहा है, पार्टियों में नये लोग आ नहीं रहे हैं। युवाओं का एक वर्ग, जिनको कहीं काम नहीं मिल रहा है, वे एन0जी0ओ0 में शामिल होकर उसी मंच से क्रांति करने की बात करने लगे हैं।

उनकी प्रकाशित कृतियों में 'बँधी नदी का विद्रोह' (कहानी–संग्रह), 'मुक्ति मार्ग की तलाश' (निबंध संग्रह), 'मुक्तिबोध की संकलित प्रगतिवादी रचनाएँ गद्य और पद्य' (सम्पादन), 'स्याही के अनेक रंग' (विविध), 'चकवारनामा' (वंश–इतिहास), 'क्रांतिकारी भगत

सिंह', 'भीष्मपितामह', 'दास्तां–ए–हिन्द' और 'इन्तकाम नहीं इंकलाब' (नाटक), 'किताब मेरी ज़िन्दगी' (संस्मरण) और 'लक्ष्यों के पथ पर' (आत्मकथात्मक उपन्यास) प्रख्यात हैं। 'अक्खड़ राम की फक्कड़ वाजी' (फेसबुक डायरी) भी मूल भाव से अलग नहीं है।

उन्होंने 'जनशक्ति' (साप्ताहिक), 'युग–संकेत' (मासिक), 'सूरज–चाँद' (त्रैमासिक) और 'हॉक' (वार्षिक) पत्रिकाओं का संपादन भी किया है।

उनके तमाम प्रकाशित कृतियों में से अधिकांश मूल्य–विहीन विकृति राजनीति से ही संबंधित है। इसलिए इन पर अनुसंधान करने का सशक्त आधार मौजूद है। वस्तुतः राजनीतिक दहपटता, विकृति एवं मूल्य–विहीनता के कारण ही देश आज भी पूर्ण विकसित देश नहीं हो सका है। वैसे यह दीगर बात है कि राजन जी ने उसी दलीय राजनीति की विकृतियों को रेखांकित किया है, जिसके वे तीन बार विधायक रह चुके हैं, लेकिन सभी दलों से संबंधित राजनीति विकृति को प्राप्त कर आम आवाम सहित देश को जर्जर बना रही है। इसलिए राजनीतिक विकृति से संबंधित अनुसंधान की माँग आज समय की माँग सिद्धांत हो चुकी है, इसलिए यह अनुसंधान सामाजिक ही प्रतीत होता है, दूसरी ओर इनपर इससे पहले शोध भी नहीं हुआ है, जिसके कारण इनके जनहितकारी और राष्ट्रीय सहकारी विचार भी नदी और हवा बनकर अभी तक बह नहीं सकी है। इसलिए 'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' अनुसंधान अपरिहार्य प्रतीत हो रहा है।

इनके कृतित्व की गहराई में उतरने से प्रतीत यह भी होता है, कि इनकी तमाम रचनाएँ राजनीतिक विकृतियों के ही राज का पर्दाफाश कर रही हैं। इसलिए भी इस अनुसंधान से विकृत राजनीति को सुकृत से संयुक्त करने में सहायता मिल सकती है। इसलिए इस अनुसंधान की आवश्यकता देश की स्थिरता के मद्देनज़र भी अपरिहार्य प्रतीत होती है।

शोध–विषय का महत्व :–

जिस अनुसंधान से संपूर्ण जीव–जगत सहित विशेष कर मानव जीवन देश की राजनीति का उत्कर्ष हो, वही शोध महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोधकार्य 'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' के मूल में दलित शोषण–उत्पीड़न, अंधविश्वास का आधार और विकृत राजनीति का बाजारवाद ही रेखांकित होता है, इसलिए इस शोध–विषय का अत्यन्त गंभीर और नवीन स्थापना का गहरा महत्व है।

राजनीति के संदर्भ में यह स्पष्ट हो चुका है कि साहित्यिक आधार विहीन होने से ही राजनीति विकृत हो चुकी है। यह विकृत राजनीति जबतक सुकृत नहीं होगी, तबतक न तो देश का कल्याण होगा और न ही राजनीतिक दलों में रहनेवाले जमीनी नेताओं को

शांति मिलेगी। तकरीबन प्रत्येक राजनीतिक दलों के भीतर भी खींचातानी विकृत राजनीति की ही पहचान है।

स्त्री–विमर्श को नयी दिशा–दशा प्रदान करने वाले समकालीन उपन्यासकार राजेन्द्र यादव जी ने भी कहा है कि आज सत्ता के खेल में कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता है, इसीलिए यहीं साहित्यकार का रोल आता है। राजनीति में वोट–बैंक बनाने का काम होता है। उस समय राजनीतिक जागरूकता तो होती है, पर भीतरी सांस्कृतिक और सामाजिक जागरूकता नहीं आ पाती। राजनीति समाज की यथा स्थिति का इस्तेमाल करती है और उसे बनाए रखती है। साहित्यकार की भूमिका यहीं आती है कि वह भीतर की चीजों को बदले। समाज अगर चीजों को बदल नहीं पा रहा है, तब साहित्य पहल करे और राजनीति को चिंतन–मनन के लिए उकसाए, उसे उठाए और एक दिशा इंगित कर बढ़ने को बाध्य करे।

उपन्यासकार राजेन्द्र यादव के कथनानुसार ही साहित्यकार राजेन्द्र राजन ने भी अपनी ही कम्युनिस्ट पार्टी को उकसाने के लिए, जगाने और उठाने के लिए ही आत्मकथात्मक एउपन्यासों को लिखा, लेकिन उनकी पार्टी के लोग ही उनका विरोधी बन गए। तथापि उनकी कलम रूक नहीं सकी और आज भी चल रही है।

यह सिद्ध हो चुका है कि राजनीति प्रायः हर देश–काल में येन–केन–प्रकारेण सत्ता–प्राप्ति का साधन ही रही है। विक्रमादित्य काल के कालिदास हों या खिलजी का समकालीन खुसरो हों, अकबरी दरबार के रहीम हों अथवा आजादी के पूर्व के भारतेन्दु या प्रेमचन्द हों अथवा आधुनिक भारत के रेण, नागार्जुन, पाश और धूमिल, सबने साहित्य को, समकालीन राजनीति को आम जन के हित में मोड़ने–जोड़ने–रोकने–टोकने की गुरूतर और सार्थक भूमिका निभायी है।

कहते है कि नेहरू और दिनकर एक दिन संसद की सीढ़ियों पर उतर रहे थे कि बातचीत में मशगूल दिनकर बुरी तरह लड़खड़ा गए। कदकाठी से भी मजबूत दिनकर ने उन्हें संभाल लिया। नेहरू ने आभार जताते हुए कहा कि अभी आप थाम न लेते, तो गिर ही जाता है। दिनकर जी ने मौके का लाभ उठाते हुए कह दिया–पंडित जी! राजनीति जब भी लड़खड़ाती है, साहित्य उसे थाम लेता है।....और दोनों हँस पड़े।

जो दिनकर कांग्रेसी सांसद थे और नेहरू के करीबी, उन्होंने नेहरू को 'लोकदेव नेहरू' भी कहा, उन्होंने ही कांग्रेस पार्टी की विकृति और प्रधानमंत्री की उस विकृति से उदासीनता देखकर 'परशुराम की प्रतीक्षा' लिखकर कांग्रेस की राजनीति सहित प्रथम प्रधानमंत्री की नीति को गलत करार दिया, लेकिन उनपर वैसे वाक्–पत्थर फेंके नहीं गए, जैसे प्रगतिवादी साहित्यकार राजेन्द्र राजन पर चलाए जाने लगे।

वस्तुतः साढ़े चार सौ पृष्ठों का 'लक्ष्यों के पथ पर' उपन्यास को उनके संचित जीवनानुभवों का यदि लेखा–जोखा कहा जाए, तो अत्युक्ति नहीं होगी। इस उपन्यास की कथाभूमि बेगूसराय है, लेकिन इसे आँचलिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता है। उपन्यासकार ने कथा–नायक मनोहर के संघर्षों, उपलब्धियों और यात्राओं बहाने अनेक जमीनी प्रश्नों को रेखांकित किया है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पूरा वक्ती कार्यकर्त्ता से राजनीतिक जीवन शुरू करने वाले मनोहर के विधायक बनने और बिहार की राजनीति में कॉमरेड चन्द्रशेखर सिंह और कॉमरेड सूर्य नारायण सिंह के आदर्शों को ऊँचाई तक ले जाने के अरमानों को संजोये राजनीतिक जीवन में पार्टी के पराभव को देखता है। इस पराभव के मूल में पार्टी के कद्दावर नेता ही सिद्ध होते हैं। वस्तुतः यह उपन्यास अपने समय, समाज और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की जर्जरता को इतनी गहराई तक रेखांकित करता है कि उसकी अपनी पार्टी के लोग ही उसपर पत्थर फेंकने लगते हैं।

वस्तुतः विकृत राजनीति, लकवाग्रस्त लोकतंत्र और पूँजीवादी कुव्यवस्था के खिलाफ राजेन्द्र राजन का जो विद्रोही तेवर है, इसके कारण भी शोध–विषय महत्वपूर्ण हो जाता है। राजन जी की लेखन–शैली और भाषा सहज और सरल है। उनका सीधा संपर्क और संबंध जनता से है। इसलिए भी शोध–विषय महत्वपूर्ण हो जाता है।

हिन्दी साहित्यकार राजेन्द्र राजन जी के नाटक 'इंतकाम नहीं इंकलाब' एवं 'दास्तां–ए–हिन्द' भी विकृत राजनीति का विरोध कर सुकृत राजनीति को स्थापना का प्रकाश विकीर्ण करता है। इसके साथ ही दलित–दोहन–उत्पीड़न का चित्रण भी गहराई से किया है। तमाम कृतियाँ अवसरवादी और समझौतावादी उस राजनीति का पर्दाफाश करती है, जिसके कारण तकरीबन प्रत्येक राजनीतिक दल के अंदर उसके नेता ही उठा–पटक की राजनीति करते रहते हैं।

अस्तु, हम कह सकते हैं कि सामयिकता संयुक्त विषय का गहरा महत्व है।

पूर्व शोध–कार्य :–

विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में प्रगतिशील साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कार्य हो चुके हैं और हो भी रहे हैं, लेकिन हिन्दी के प्रगतिशील साहित्यकार श्री राजेन्द्र राजन जी पर अभी तक एक भी शोध–कार्य नहीं हुआ है। प्रथम शोध–कार्य ही 'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' शीर्षक से हो रहा है।

शोध–कार्य–स्रोत (आधार ग्रन्थ) :–

उपन्यास– (1) एक रंग यह भी (प्रकाशन वर्ष–2020)

(2) लक्ष्यों के पथ पर (प्रकाशन वर्ष–2021)

कहानी–संग्रह– बँधी नदी का विद्रोह (प्रकाशन वर्ष–2023)

निबंध–संग्रह – मुक्तिमार्ग की तलाश (प्रकाशन वर्ष–2020)

विविध – स्याही के अनेक रंग (प्रकाशन वर्ष–2020)

नाटक– (1) क्रांतिनायक भगत सिंह (प्रकाशन वर्ष–2021)

(2) भीष्म पितामह (प्रकाशन वर्ष–2021)

(3) दास्ताँ–ए–हिन्द, और (प्रकाशन वर्ष–2020)

(4) इन्तकाम नहीं इंकलाब (प्रकाशन वर्ष–2023)

इनके अलावा–(1) मुक्तिबोध की संकलित–प्रगतिवादी रचनाएँ गदय और पद्य का संपादन

(2) चकवारनामा (वंश–इतिहास) (प्रकाशन वर्ष–2016)

(3) अक्खड़ राम की फक्कड़ वाजी (फेसबुक डायरी)

शोध की सीमा :–

प्रगतिशील हिन्दी साहित्यकार राजेन्द्र राजन की कृतियों में एक ओर छूआछूत, भेदभाव, ऊँच–नीच सहित दलित नरनारी–संत्रास का प्रकाश है, तो दूसरी ओर विकृत राजनीति और अवसरवादी नेताओं पर कुठाराघात भी है। इसलिए शोध की सीमा असीमा है।

शोध–पूर्व कल्पना/संभावित निष्कर्ष :–

अंधविश्वास और अंधास्था के अंधकार के मध्य राजनैतिक विकृतियों का ताण्डव देखकर ही शोधकल्पना साकार हुई तथा इससे संबंधित जब साहित्यकारों की तलाश की, तब प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन जी रेखांकित हुए, क्योंकि इनकी अधिकांश रचनाओं में राजनीतिक विकृति को ही रेखांकित किया गया है। इस अनुसंधान से सुकृत राजनीतिक स्थापना का आलोक विकीर्ण हो सकता है।

शोध–प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध–प्रबंध में विषय से संबंधित उपयुक्त और संभावित मानक ग्रंथों के अध्ययन के दौरान शोधकर्त्ता का यह उद्देश्य होगा कि वह परीक्षण, मूल्यांकन और शोध–निष्कर्ष की स्थापना के लिए शोध–प्रविधि के आगमन, निगमन, तुलनात्मक और समाजशास्त्रीय सहित राजनीतिशास्त्रीय पद्धतियों का उपयोग करेगा।

अनुसंधान में प्रस्तावित अध्याय :–

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय :– राजेन्द्र राजन का व्यक्तित्व

(क) जन्म (ख) शिक्षा (ग) राजनीति में प्रवेश

दूसरा अध्यायः– राजेन्द्र राजन का कृतित्व

(क) प्रारंभिक रचना (ख) प्रौढ़ रचना (ग) उत्कृष्ट रचना

तीसरा अध्यायः– उपन्यास में राजनीतिक विद्रूपता

(क) नेताओं की स्वार्थपरता (ख) दलीय खींचातानी

(ग) दल की विघटन

चौथा अध्याय :– कहानियों में सामाजिक और राजनीतिक विषमता

(क) शोषण–दोहन (ख) जातीय विषमता

(ग) जमींदारों के दाव

पाँचवा अध्यायः– कविताओं में व्यंग्य और राजनैतिक विकृतियाँ

(क) ग्रामीण कविता (ख) नगरीय कविता

(ग) राजनैतिक कविता

उपसंहार

सहायक ग्रंथ–सूची :–

(क) पुस्तक–सूची :

1. 'हिन्दी–साहित्य का इतिहास' : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1929 ई0
2. 'हिन्दी–साहित्य का इतिहास' सं0 डॉ0 नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, हरियागंज, नई दिल्ली, 1973 ई0
3. 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' : डॉ0 गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979 ई0
4. 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास' : सं0 भीष्म सहनी, रामजी राय भगवती प्रसाद निदारिया, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली, 1975 ई0
5. 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता' : डॉ0 नवलकिशोर, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1997 ई0

6. 'आधुनिकता और हिन्दी उपन्सास' : डॉ0 इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1981 ई0
7. 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ0 सुषमा धवन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961 ई0
8. 'हिन्दी कहानी की शिल्प–विधि का विकास' : डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1960 ई0
9. 'हिन्दी गद्य–शैली का विकास' : डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1976 ई0
10. 'हिन्दी जाति का इतिहास' : डॉ0 रामविलास शर्मा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1986 ई0
11. हिन्दी नाटक–डॉ0 वच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1989
12. हिन्दी की प्रगतिशील कविता, विकास प्रकाशन, स0–डॉ0यशवंतकर संतोष कुमार लक्ष्मण
13. रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन संस्करण 3, 2018, नई दिल्ली
14. 'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका' : डॉ0 मैनेजर पांडेय, साहित्य अकादमी, हरियाणा, 1989 ई0

(ख) पत्रिकाएँ :–

1. आलोचना–सं0–अरुण कमल
2. हंस–सं0–संजय सहाय
3. आजकल–सं0–सीमा ओझा
4. वागर्थ–सं0–शंभुनाथ
5. पाखी–सं0–प्रेम भारद्वाज
6. कथादेश–सं0–हरिनारायण
7. तद्भव–सं0–अखिलेश
8. नया ज्ञानोदय–सं0–लीलाधर मंडलोई
9. अस्मितादर्श–सं0–विमलकृति
10. समय–सुरभि–अनंत–सं0–नरेन्द्र कुमार सिंह

शोध–निर्देशक　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　शोध–प्रज्ञा

अन्तर विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) को प्रेषित करने हेतु सम्बद्ध

''प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व''

<u>शोध–सारांश</u>

'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' अनुसंधान के आलोक में संबंधित तथ्यों का संकलन कर व्यवस्थित एवं सावधानीपूर्वक सूक्ष्म बुद्धि से राजनीति के अपराधियों से मैत्री, राजनीति का अपराधीकरण और जमीनी राजनीति के पतन–संबंधी सिद्धांतों का उद्घाटन करना और राजनीति की वास्तविक जन–विकासात्मक छवि की स्थापना ही है, ताकि राजनीति अवसरवादी और आपराधिक अंधकार से निकलकर जन–सरोकारी और राष्ट्र–हितकारी प्रकाश की ओर बढ़ सके।

आज की राजनीति दोधारी तलवार हो चुकी है, जो अपने दल के सारस्वत और जनता सहित देश–विकासक जमीनी नेताओं सहित विरोधी दलों पर भी प्रहार करती है। प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन की कविता हो या कहानी, उपन्यास हो या विचारोत्तेजक आलेख, सभी में विकृत राजनीति को ही रेखांकित किया गया है।

शोध–निर्देशक **शोध–प्रज्ञा**

डॉ0 बिंदु चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
सी0एम0 कॉलेज
दरभंगा (बिहार)

MA, MPhil. (JNU)
PhD (Delhi University)

सहमति–पत्र

शोध–पूर्व परीक्षोत्तीर्ण शोध–प्रज्ञा अणु कुमारी, पैट क्रमांक–22090051 द्वारा प्रस्तुत शोधकार्याधारित शीर्षक–'प्रगतिशील साहित्यकार राजेन्द्र राजन : व्यक्तित्व और कृतित्व' राजनीतिक विकृति एवं दलित–शोषण–उत्पीड़न से पूर्णतः सम्बन्धित है।

मेरी जानकारी में इस विषय से सम्बन्धित शोध–कार्य पूर्व में नहीं हुए हैं। इसलिए यह शोध–कार्य मौलिक स्थापना की ओर सम्भावित है।

शोध–प्रज्ञा अणु कुमारी व्यवहार–कुशलता एवं आचरण–शुद्धता के आत्मिक आलोक से आलोकित प्रतीत होती है। मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करते हुए वचन देती हूँ कि शोध–कार्य के दौरान यथा–समय मार्ग–दर्शन कराती रहूँगी।

शोध–निर्देशक